द्वितीय अभ्यास

अनद्यतन भूत (लङ्)*

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अपठत् (उसने पढ़ा)	अपठताम् (उन दो ने पढ़ा)	अपठन् (उन्होंने पढ़ा)
म० पु०	अपठः (तूने पढ़ा)	अपठतम् (तुम दो ने पढ़ा)	अपठत (तुमने पढ़ा)
उ० पु०	अपठम् (मैंने पढ़ा)	अपठाव (हम दो ने पढ़ा)	अपठाम (हमने पढ़ा)

संक्षिप्त रूप

	एकवचन		द्विवचन		बहुवचन	
प्र० पु०	(सः)	अत्	(तौ)	अताम्	(ते)	अन्
म० पु०	(त्वम्)	अः	(युवाम्)	अतम्	(यूयम्)	अत
उ० पु०	(अहम्)	अम्	(आवाम्)	आव	(वयम्)	आम

इसी प्रकार

लिख्—लिखना	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
वद्—कहना	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
हस्—हँसना	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
धाव्—दौड़ना	अधावत्	अधावताम्	अधावन्
रक्ष्—रक्षा करना	अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्
क्रीड्—खेलना	अक्रीडत्	अक्रीडताम्	अक्रीडन्
गम्—जाना	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
आगम्—आना	आगच्छत्	आगच्छताम्	आगच्छन्
पत्—गिरना	अपतत्	अपतताम्	अपतन्
नृत्—नाचना (दि०)	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
भू (भव्)—होना	अभवत्	अभवताम्	अभवन्

भूतकाल—संस्कृत भाषा में भूतकाल के सूचक तीन लकार हैं—लिट् (परोक्षभूत), लङ् (अनद्यतन भूत) और लुङ् (सामान्य भूत)। संस्कृत व्याकरण में इन तीनों में अन्तर माना गया है। परोक्षभूत—अर्थात् वह बात जो

*अनद्यतन भूत (लङ्) में केवल मध्यम पुरुष के एकवचन में विसर्ग (:) होता है, और कहीं नहीं। हल् अक्षरों का पाँच स्थानों पर ध्यान रखो, जैसे—'अपठत्' में त् हलन्त अक्षर है।

Scanned with CamScanner

आँख के सामने की न हो, एक प्रकार से ऐतिहासिक हो, उसमें लिट् होता है। जैसे—'रामो राजा बभूव'(राम राजा हुए)। अनद्यतन भूत—जो बात आज की न हो पिछले दिन की हो, उसमें लङ् होता है। जैसे 'देवदत्तः ह्यः काशीमगच्छत्' (देवदत्त कल काशी गया)। इस प्रकार व्याकरण की दृष्टि से 'रमा अद्य प्रातः पुस्तकमपठत' (रमा ने आज सुबह पुस्तक पढ़ी) अशुद्ध वाक्य है। इस वाक्य के स्थान में 'रमा अद्य प्रातः पुस्तकमपाठीत्' शुद्ध वाक्य है किन्तु व्यवहार में यह भेद नहीं रह गया है। लङ् और लुङ् का किसी भेद के बिना प्रयोग किया जा रहा है, बल्कि लङ् का भूतकाल में प्रायः प्रयोग होता है।

भूतकाल के 'लङ्' का प्रयोग करते समय छात्र प्रायः भूल करते हैं। वे 'उसने पढ़ा' का अनुवाद 'तेन अपठत्' कर देते हैं। यहाँ पर 'उसने' का अनुवाद 'सः' होगा, क्योंकि प्रथमा विभक्ति का अर्थ भी 'ने' है, अतः इस वाक्य का अनुवाद 'सः अपठत्' होगा; इसी प्रकार कुछ अन्य उदाहरण—

१. शीला अपठत् (शीला ने पढ़ा)। २. तौ अवदताम् (उन दो ने कहा)। ३. ते अहसन् (वे हँसे)। ४. अहम् अधावम् (मैं दौड़ा)। ५. युवाम् अक्रीडतम् (तुम दो खेले)।

संस्कृत में अनुवाद करो

(क) १. बन्दर आया। २. लड़के दौड़े। ३. रमेश ने आज नहीं पढ़ा। ४. सोहन और श्याम वहाँ खेले। ५. गोपाल यहाँ क्यों नहीं आया? ६. देवेन्द्र कहाँ खेला? ७. पिता जी कल आये। ८. हम नहीं हँसे। ९. इस समय सोहन कहाँ गया? १०. कमला ने कल सायंकाल नहीं पढ़ा। ११. हाथी और घोड़े दौड़े। १२. छात्रों ने क्यों नहीं पढ़ा? १३. ईश्वर ने रक्षा की। १४. गुरु जी क्यों हँसे? १५. साधु ने क्या कहा?

(ख) १६. वे क्यों नहीं खेले? १७. तुम क्यों हँसे? १८. तूने क्या कहा? १९. हमने कुछ नहीं (किमपि न) पढ़ा। २०. तूने ऐसा क्यों लिखा? २१. शीला नहीं नाची। २२. वे दो कहाँ गये? २३. वे क्यों हँसे? २४. तुमने क्या पढ़ा? २५. क्या वह हँसी थी?

तृतीय अभ्यास

सामान्य भविष्यत् (लृट्)

प्र० पु० पठिष्यति (वह पढ़ेगा) पठिष्यतः (वे दो पढ़ेंगे) पठिष्यन्ति (वे पढ़ेंगे)
म० पु० पठिष्यसि (तू पढ़ेगा) पठिष्यथः (तुम दो पढ़ोगे) पठिष्यथ (तुम पढ़ोगे)
उ० पु० पठिष्यामि (मैं पढ़ूंगा) पठिष्यावः (हम दो पढ़ेंगे) पठिष्यामः (हम पढ़ेंगे)

Scanned with CamScanner

संक्षिप्त रूप

प्र० पु०	(सः) इष्यति	(तौ) इष्यतः	(ते) इष्यन्ति
म० पु०	(त्वम्) इष्यसि	(युवाम्) इष्यथः	(यूयम्) इष्यथ
उ० पु०	(अहम्) इष्यामि	(आवाम्) इष्यावः	(वयम्) इष्यामः

इसी प्रकार—

धातु	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लिख्—लिखना	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
वद्—कहना	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
हस्—हँसना	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
धाव्—दौड़ना	धाविष्यति	धाविष्यतः	धाविष्यन्ति
रक्ष्—रक्षा करना	रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति
क्रीड्—खेलना	क्रीडिष्यति	क्रीडिष्यतः	क्रीडिष्यन्ति
गम्—जाना	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
आगम्—आना	आगमिष्यति	आगमिष्यतः	आगमिष्यन्ति
पत्—गिरना	पतिष्यति	पतिष्यतः	पतिष्यन्ति
नृत्—नाचना (दि०)	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
भू (भव्)—होना	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति

भविष्यत् काल—भविष्यत् काल के सूचक दो लकार हैं—लृट् (सामान्य भविष्यत्) और लुट् (अनद्यतन भविष्यत्)। यह अन्तर भी व्यवहार में नहीं रह गया है। लुट् का प्रयोग बहुत कम देखने में आता है, केवल लृट् का ही प्रयोग होता है।

लृट् बनाने का सरल ढंग यह है कि शुद्ध धातु पर 'इ' *लगाकर आगे 'ष्य' रखो और फिर वर्तमान काल की भांति 'ति' 'तः' 'न्ति' आदि प्रत्यय जोड़ दो।

उदाहरणार्थ—

१. देवः पठिष्यति (देव पढ़ेगा) २. वानराः धाविष्यन्ति (वानर दौड़ेंगे)। ३. पत्राणि पतिष्यन्ति (पत्ते गिरेंगे)। ४. त्वं कदा गमिष्यसि ? (तू कब जायगा ?) ५. वयं क्रीडिष्यामः (हम खेलेंगे।) ६. के लेखिष्यतः (कौन दो लिखेंगी ?)

---

*कुछ ऐसी भी धातुएँ हैं जिनमें 'इ' नहीं लगता, ऐसी दशा में शुद्ध धातु के आगे 'स्यति', 'स्यतः', 'स्यन्ति' लगेंगे; पा—पास्यति (पीयेगा), वत्स्यति (वास करेगा), दास्यति (देगा) आदि। ये अनिट् धातु कहलाती हैं।

Scanned with CamScanner

संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) १. गोविन्द कल आयेगा। २. श्यामा यहाँ नाचेगी। ३. हरि कल वहाँ दौड़ेगा। ४. घोड़े नहीं दौड़ेंगे। ५. लड़कियाँ जरूर नाचेंगी। ६. रमेश सुबह पढ़ेगा। ७. ईश्वर रक्षा करेगा। ८. पके हुए (पक्वानि) फल गिरेंगे। ९. कमला नहीं हँसेगी। १०. छात्र शाम को खेलेंगे। ११. हाथी यहाँ आयेंगे। १२. दो छात्र यहाँ पढ़ेंगे। १३. रजनी कब नाचेगी ? १४. दो ब्राह्मण यहाँ आयेंगे। १५. मेहमान (अतिथयः) कल जायेंगे।

(ख) १६. तुम कब जाओगे ? १७. मैं नहीं दौड़ूँगा। १८. तुम दो कब आओगे ? १९. वे क्यों हँसेंगे ? २०. मैं यहीं पढ़ूँगा। २१. हम नहीं जायेंगे। २२. वे कब नाचेंगी ? २३. तुम सब वहाँ खेलोगे। २४. क्या आप यहाँ नहीं आयेंगे ? २५. राजा (नृपः) रक्षा करेगा।

चतुर्थ अभ्यास

आज्ञार्थक लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठतु (वह पढ़े)	पठताम् (वे दो पढ़ें)	पठन्तु (वे पढ़ें)
म० पु०	पठ (तू पढ़)	पठतम् (तुम दो पढ़ो)	पठत (तुम पढ़ो)
उ० पु०	पठानि (मैं पढ़ूं)	पठाव (हम दो पढ़ें)	पठाम (हम पढ़ें)

संक्षिप्त रूप

प्र० पु०	(सः)	अतु	(तौ)	अताम्	(ते)	अन्तु
म० पु०	(त्वम्)	अ	(युवाम्)	अतम्	(यूयम्)	अत
उ० पु०	(अहम्)	आनि	(आवाम्)	आव	(वयम्)	आम

इसी प्रकार

लिख्—लिखना	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
वद्—कहना	वदतु	वदताम्	वदन्तु
हस्—हँसना	हसतु	हसताम्	हसन्तु
धाव्—दौड़ना	धावतु	धावताम्	धावन्तु
रक्ष्—रक्षा करना	रक्षतु	रक्षताम्	रक्षन्तु
क्रीड्—खेलना	क्रीडतु	क्रीडताम्	क्रीडन्तु
गम्—जाना	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु

Scanned with CamScanner

आगम्—आना	आगच्छतु	आगच्छताम्	आगच्छन्तु
पत्—गिरना	पततु	पतताम्	पतन्तु
नृत्-नाचना (दि०)	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
भू (भव्)—होना	भवतु	भवताम्	भवन्तु

आज्ञार्थक लोट्—विधिलिङ् और लोट् लकार आज्ञा, अनुज्ञा तथा प्रार्थना आदि अर्थों के सूचक हैं। आशीर्वाद के अर्थ में भी लोट् का प्रयोग होता है।

उदाहरण

१—सुशीला गच्छतु (सुशीला जाये)। २—छात्राः क्रीडन्तु (विद्यार्थी खेलें)। ३—परमात्मा रक्षतु (ईश्वर रक्षा करे)। ४—यूयम् गच्छत (तुम जाओ)। ५—बालिकाः नृत्यन्तु (लड़कियाँ नाचें)। ६—गच्छाम किम् ? (क्या हम जावें ?)। ७—इदानीं छात्राः पठन्तु (इस समय छात्र पढ़ें)।

(विशेष अध्ययन के लिए आगे क्रिया-प्रकरण देखिये।)

संस्कृत में अनुवाद करो

१—गोपाल और कृष्ण पढ़ें। २—नौकर (सेवकः) जाये। ३—लड़के दौड़ें। ४—भगवान् क्षमा करे। ५—मैं जाऊँ ? ६—हम खेलें ? ७—वे न हँसें। ८—अब आप खेलें। ९—तुम लोग पढ़ो। १०—हम दो पढ़ें ? ११—तुम दो मत हँसो। १२—तुम सब दौड़ो। १३—नर्तकियाँ (नर्तक्यः) नाचें। १४—क्यों हँसते हो ? १५—यहाँ आओ। १६—वहाँ न जाओ। १७—दौड़ो मत। १८—हँसो मत। १९—पढ़ो। २०—आओ, नाचो। २१—अब खेलो मत, पढ़ो। २२—सब छात्र पढ़ें। २३—तुम वहाँ जाओ। २४—दो छात्र दौड़ें।

Scanned with CamScanner